16 – 31 मार्च 2020
वर्ष : 03, अंक : 12
प्रकाशक
सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

पाक्षिक
editorsbbulletin@gmail.com
सर्व भाषा बुलेटिन
भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के संरक्षण–संवर्धन को समर्पित

डॉ. सुमन सिंह की पुस्तक 'भारतेतर हिंदी साहित्यकार' में प्रकाशित है विस्तृत साक्षात्कार

भारतेतर हिंदी साहित्यकार सुषम बेदी का निधन

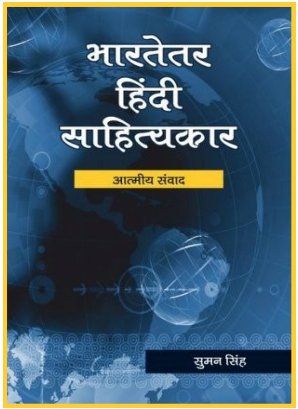

न्यूयॉर्क स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में हिंदी की प्राध्यापिका और लेखिका थीं सुषम बेदी

पुस्तक में सुषम बेदी का साक्षात्कार

न्यूयार्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा और साहित्य की प्रोफेसर सुषम बेदी जी का नाम प्रवासी-साहित्य लेखन में अपरिचित नहीं है। परदेस में रहते हुए भी अपनी भाषा और साहित्य के प्रति उनका सृजनात्मक समर्पण अनुकरणीय है। साहित्य की प्रायः सभी विधाओं पर, चाहे वह कविता हो, कहानी हो, उपन्यास हो, नाटक हो, निबन्ध हो, आलोचना या आत्मकथा ही क्यों न हो आपकी लेखनी समग्र संवेदनशीलता, दक्षता और विद्वता के साथ चलती है। सुषम जी गायन और रंगमंच से भी गहरे जुड़ाव रखतीं थीं। भारत में 20 मार्च की यह दुखद समाचार लेकर आई कि अब वे इस दुनिया को विदा कह चुकी है। फेसबुक पर साहित्यकार आशीष कांधवे जी ने फोस्ट लिखा है कि 'आज सुबह उठते ही एक झकझोर देने वाली खबर मिली की हिंदी साहित्य की वैश्विक कहानीकार सुषम बेदी अब हमारे बीच नहीं है। सुषमा जी जितनी बड़ी कहानीकार थी उतना ही बड़ा मानव हृदय भी उनके भीतर था।'

रेखा राजवंशी की का पोस्ट था, 'लन्दन के लेखक तेजेन्द्र शर्मा की 'मृत्यु के इंद्रधनुष' कहानी संग्रह पढ़ के आज खतम ही किया था कि आज सुबह ही समाचार समाचार मिला कि न्यूयॉर्क स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में हिंदी की प्राद्यापिका और लेखिका सुषम बेदी जी हमारे बीच नहीं रहीं।'

एक और भारतेतर साहित्यकार तथा सर्जनात्मक कार्यों में सदा संलग्न रहने वाली सुधा ओंम ढ़ींगरा ने लिखा है कि 'कल जब पता चला। तब से अपने आप में नहीं हूँ। सादर विनम्र श्रद्ध ंजलि।'

अनूप भार्गव ने लिखा है कि 'कल जब सुषम जी की बेटी पूर्वा (बेदी) की फेसबुक पर यह संक्षिप्त सी पोस्ट देखी, (Very bleak prognosis for my mom & I"ll try to read any messages you post for her to hear before she passes if you post something & doing a very short hospital visit today) तो दुःख तो हुआ, आश्चर्य नहीं। सुषम जी कई महीनों से अस्वस्थ थी। मन पूरे दिन बहुत उदास रहा। आज उस ख़बर जिस का डर था, वह सच साबित हुई। किसी भी अच्छे व्यक्ति का जाना अच्छा नहीं लगता, सुषम जी एक बहुत ही उदार, जिंदादिल, बहुमुखी प्रतिभा की धनी और हँसमुख मित्र थी।'

डीएवी कॉलेज वाराणसी की डॉ. सुमन सिंह का पोस्ट ग्लानि से भरा था। पढ़कर मन दुखी भी हुआ और द्रवित भी। अभी कुछ ही दिन पूर्व डॉ. सुमन सिंह की एक पुस्तक 'भारतेतर हिंदी साहित्यकार' सर्व भाषा ट्रस्ट प्रकाशन से ही प्रकाशित हुई थी। यह पुस्तक सुषम वेदी जी के हाथ में अभी जा भी नहीं पाई थी कि वे अनंत की यात्रा पर चली गईं। डॉ. सुमन सिंह जी के साथ ही सर्व भाषा ट्रस्ट की ओर से भी वैश्विक लेखिका सुषम बेदी जी को विनम्र श्रद्धांजलि।■■

सम्मानित हुए 'भोजपुरी साहित्य में महिला रचनाकारन के भूमिका' के संपादक

पूर्वांचल भोजपुरी महासभा का वसंतोत्सव संपन्न

'पूर्वांचल भोजपुरी महासभा', गाजियाबाद के तत्वावधान में गत दिनों भोजपुरी सम्मेलन एवं होली मिलन का आयोजन किया गया। इस आयोजन में समारोह अध्यक्ष के रूप में आशा शर्मा (महापौर) ने सिरकत की।

कार्यक्रम का आरंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना से हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में पूर्वांचल के विशिष्ट विभूतियों को सम्मानित किया गया। इस वर्ष पूर्वांचल भोजपुरी महासभा ने महिलाओं पर केंद्रित भोजपुरी की प्रथम पुस्तक 'भोजपुरी साहित्य में महिला रचनाकारों की भूमिका' के संपादकों डॉ. सुमन सिंह, केशव मोहन पांडेय और जयशंकर प्रसाद द्विवेदी को सम्मानित किया। इस अवसर पर पूर्वोदय स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

कार्यक्रम में लखनऊ से पधारी भोजपुरी की सुप्रसिद्ध लोकगायिका संजोली पांडेय ने अपने फागुनी गीतों से सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। किशोर एन्ड पार्टी के साथ आये भोला पांडेय और अन्य कलाकारों ने पश्चिम में पूरब की सुंदर छटा बिखेरी। महासभा अध्यक्ष अशोक श्रीवास्तव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। ■■

अंगिका विभाग के नए अध्यक्ष

भागलपुर विश्वविद्यालय के नए अध्यक्ष बने डॉ.प्रेम प्रभाकर

डॉ.प्रेम प्रभाकर

हिंदी और अंगिका के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. अमरेंद्र के हवाले से ज्ञात हुआ है कि भागलपुर विश्वविद्यालय अंगिका विभाग के नये अध्यक्ष डॉ प्रेम प्रभाकर जी बने हैं। डॉ. अमरेंद्र ने अपने एक पोस्ट में उन्हें बधाई देते हुए लिखा है कि, विश्वविद्यालय अंगिका विभाग के नये अध्यक्ष, जिनकी मात्र मातृभाषा ही अंगिका नहीं, बल्कि अंगिका के सिद्ध समालोचक भी हैं, डॉ. प्रेम प्रभाकर के दिशा निर्देश और संचालन में अंगिका अपने उस गौरव को प्राप्त कर सकेगी, मुझे पूर्ण विश्वास है। जिसकी कल्पना पूर्व कुलपति डॉ. राम आश्रय यादव ने की ही नहीं थी, बल्कि इस विभाग को सृजित भी किया था। भाई डॉ प्रेम प्रभाकर को अशेष हार्दिक बधाई।

सर्व भाषा बुलेटिन की ओर से भी अनन्त बधाइयाँ।■■

मेरी कविता

अंतर का युद्ध
सिद्धार्थ व बुद्ध
दोनों लड़ते हैं
और जो जीतता है
वही लिखता है
मेरी कविता।

विचारों और व्यवहारों में
तंगहाली के त्योहारों में
होता है अंतर में युद्ध
और जो जीतता है
उसी के साथ चल देती है
मेरी कविता।

रोग में, राग में
औषधि में, फाग में
चुनर की अनचाही दाग में
जो असहनीय पीड़ा दे जाती
उसी से जन्म लेती है
मेरी कविता।

मेरे अकेलेपन में भी
अशांत मन में भी
मुस्कान अंकित कर जाती है
मूक पाषाण में
दुनिया भर का आह्लाद भर जाती है
और कर जाती गुदगुदी
वही संगिनी है
मेरी कविता।

■■

केशव मोहन पाण्डेय
संपादक, सर्व भाषा बुलेटिन
नई दिल्ली

આંતરિક સંઘર્ષ
સિદ્ધાર્થ વિરૂદ્ધ બુદ્ધ
બન્ને લડે છે અને
જે વિજયી બને છે
એ જ લખે છે
મ્હારી કવિતા.....!

વિચારો અને વ્યવહારોમાં,
દુર્દશાનાં તહેવારોમાં,
જામે છે યુદ્ધ અંતરમાં અને
જે વિજયી બને છે
એની સંગે ચાલી નીકળે છે
મ્હારી કવિતા.....!

વ્યાધિમાં,રાગમાં,
ઓસડમાં અને ફાગમાં,
ચૂંદડીનાં વણચાહ્યાં ડાઘમાં
આપી જાય છે જે
અસહ્ય વ્યથા
એમાંથી જ ઉદભવે છે
મ્હારી કવિતા.....!

મ્હારી એકલતામાં પણ,
અશાંત મનમાં પણ,
સ્મિત અંકિત કરી જાય છે,
અબોલ પાષાણમાં
જગભરનો આલ્હાદ ભરી જાય છે
અને કરી જાય છે ગલીપચી
એ જ સંગીની છે
મ્હારી કવિતા.....!

■■

ગુજરાતી ભાવાનુવાદ:
રક્ષિત અરવિંદરાય દવે 'મૌન'

मेरी कविता

शीतल सृष्टि तप रही,
सारी मानवता भय में व्याप्त रही।
कोरोना अमर जीव बन
कहां से चला आता है।
नेत्रों को जो दिख न सके
वह मौत बन छा जाता है।
अंधकार में करुणा रस से
थर्राते से, भय खाते से
लोग घरों में कैद हुए।
सत्ता थी जिस मानव की
अतिरिक्त वह सभी अवशेष हुए।
खुली हवा में अब भी
दृश्य ये दिख जाता है
कहीं पक्षी तो कहीं पशु
वनस्पति संग प्यारे गीत गाता है।
दिया ईश्वर ने जो भी था
उसी में समय सारा ये बिताता है।
मनुष्य जो इतर चला गया
बार-बार मुश्किल में फंस जाता है।
आदमी से इंसान बन सका न जो
वह भगवान बनने का जोर लगाता है
व्यर्थ के इन प्रयासों से
वह दुख भरी कविता
खुद बन जाता है।
अस्तित्व के इन मायनों में
स्वच्छंद बनो और सरल बनो निश्छल बनो
और निश्चिंत बनो।
देखो फिर .....
सौभाग्य तुम तक ये चला आता है।
देख रहा सब कुछ ही विधाता
मयपुण्य तुम्हे अपनाता है।

■■

आनंद प्रकाश शर्मा
पिपरिया, जिला - होशंगाबाद (म.प्र.)
मो. - 9893204243

मेरी कविता

मेरी कविताओं को पढ़ लेना तुम
कहीं जो मैं इन हवाओं में घटाओं में खो जाऊं
और एक पल के लिए भी मैं तुम्हे याद आऊं
तो मेरी कविताओं में मुझे महसुस करना तुम।
कभी जो चांदनी तुम्हे चुपके से जलाए
मेरा चेहरा तुम्हे किसी में नजर आए
तो मेरी कविताओं में मुझे छू लेना तुम।
फूलों की महक जो तुम्हे सताए
मेरी बेकार सी बातें तुम्हे याद आएं
तो प्रिये,मेरी कविताओं को पढ़ लेना तुम।
मेरी बातें और शरारतें जो तुम्हे गुदगुदाए
मेरी चंचलता जो कभी तुम्हे दीवाना बनाए
तो बेहिचक मेरी कविताओं में मुझे पा लेना तुम।
मुस्काते अधरों संग,गुनगुनाते नैनों संग
हौले से इन कविताओं में बैठ निहारा करुंगा तुम्हे
मेरी कविताओं के छंदों को बस पी लेना तुम।
यह मेरी कविताएं ही मेरी पहचान हैं
इन्ही में बसी मेरी जान है।
इन्ही में मुझे जी लेना तुम।

■■

मुकेश सिंह
असम, भारत/9706838045

हमार कविता

पाँव पूजला से लेके
पीठ पूजला तक के बाति
शब्द में ढर जाले
पीर के तासीर से
मन के हुलास तक
कागज पर पसर जाले
लसरात,सउनात
अनासे।
राग से खटराग तक के जतरा में
भेटालें कुछ लोग
अपने के बखानत
अपने गीत गावत
अपने डुग्गी बजावत
अपने लत्ता आ लकड़ी के संगे
तब कविता मरुआ जाले।
फेर गढ़लकी परिभाषा
बानर,अकवि भा कवि
नीमन बुझाये लागेला
तबो सिरजना चलत रहेला
चाहे भा अनचाहे
दुनिया का संगे।
बैगन लेखा हो जाला
केहु खाति पथ्य भा बैरी
केहु खाति खोबसन
भा मान-मनउवल
मन के भाव उकेरल
भा कविता लिखल।

■■

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

मेरी कविता

यह मत सोंचो कि मेरी कविता
जग में क्या काम करेगी ?
कम है क्या कि जो यह,
हर उर में नूतन भाव भरेगी ?
सामर्थ्य रखती है इतनी कि,
प्राण मृत कोशों में भी भर दे।
शुष्क पड़ी हृदय धरा को,
भाव प्रणव फिर से कर दे।
कभी झुलसती दोपहरी में,
भाव की बदली लाती है।
कभी सांझ की झुर्रियों में,
नव मुस्कान खिलाती है।
कर्म पथ के भटके राही को,
उम्मीद की ज्योत दिखाती।
थके हारे पथिक को यह,
चरैवेति का मंत्र सिखाती।
होगी हरदम ही मेरी कविता
माटी की सुवास से उर्वरित।
माँ हिन्दी! नित-नित होगी,
हर मेरी कविता पर गर्वित।

■■

डॉ. उषा किरण
पूर्वी चंपारण (बिहार)

मेरी कविता

यू सोचते हैं सभी
लेकिन लिखते हैं कवि
भूले बिसरे बातों में
अनोखी बातों पे कविता
यू ख्यालों में गलियों के गलियारों में
अनोखी बातों में सब की सासों
गुंजती हैं मेरी अनोखी कविता
यू तो सब कुछ छाया
मेरी कविता माया हैं
देखो देश में करोना महामारी आया हैं
हम सब को मिलकर इससे लड़ना हैं
इसको जड़ से भगाना
हाथ धोये मुह धोये
खुद को इससे बचाये
अनचाहे अनजाने किसी को ना छुये
खुद को दूर रखे स्वास्थ्य रखे
जन जन तक पहुचाये
ये है मेरी कविता।

■■

राजू साह
असम
मोबाइल- 9954455804

मेरी कविता

सो गया साहित्य तो कवि क्या कहे,
खो गयी यदि कलम तो कैसे सहे ?
रो रही है लेखनी, कागज भरा है आंसुओं से ,
दुख रहे हैं नेत्र उसके पश्चिमी तम के धुओं से !
अजिर वंशज भानु के, पथ मांगते हैं उड्गनों से ,
चाह है नव-पल्लवों की तमस-युत ऊसर वनों से !
बढ़ रहे पग किन्तु, लगता आँख से है लक्ष्य ओझल,
घोर घन जब राह रोके तो बता रवि क्या कहे ?
सो गया साहित्य तो कवि क्या कहे..
यूं अमावस कर रहे विचरण कहाँ दुर्दांत पथ पर ,
आत्मविस्मृत क्यों हुए, जागो तनिक ही यत्न लेकर,
नभ, जलाशय,अग्नि,वन,हिमशैल के संदेश सुंदर,
चिर पुरातन मूल्य, जिनका था सकल संसार अनुचर,
तीव्र ज्वाला ले हृदय जागो, पुरातन गौरवों की,
श्रेष्ठ वृक्षों के निकट,
नव सृजित पल्लवि क्या कहें,
सो गया साहित्य तो कवि क्या कहे...
किन्तु सोयेगा नहीं चिर नींद, यह विश्वास मेरा,
चीर वक्षस्थल तिमिर का, फिर जगेगा तेज तेरा
वेद, ऋषि-मुनि विद्वजन की यह धरा
है पुण्यशाली,
व्याप्त हैं आदर्श उनके, रग-रगों में श्रेष्ठकारी !
फिर बजेगी दुन्दुभी जग में, नवल अंकुर उगेगा,
सर्वहितकारी सनातन राष्ट्र की छवि क्या कहे !
सो गया साहित्य तो कवि क्या कहे !
खो गयी यदि कलम तो कैसे सहे ?

■■

नवीन जोशी 'नवल'
जयपुर, राजस्थान

मेरी कविता

कविता अंतरमन के भावों का मंथन ।
कविता शब्दों फुलो की माला का गुंथन ।।
कविता हँसाती, रुलाती, धैर्य, साहस को बाँधती।
कविता शब्दों में मिठास,
कड़वा सभी को निभाती ।।
कविता से अनजाने से रहस्य, दूरदृष्टि बताती।
कविता संकल्प विचारों को बढ़ाती ।।
कविता हर रस से चिंतन कराती ।
कविता ही शब्दों को ब्रह्म शक्ति बनाती।।

■■

राजू गजभिये
हिंदी साहित्य सम्मेलन

मेरी कविता

कविता तू कितनी अच्छी है
आती है तो मेरे द्वंद्व भी बाहर आते हैं
कागज रंगीन हो जाती है
भाव अपने जगह बना लेते हैं
विचार अभिव्यक्त हो जाता है।
कविता लिखता कोई भी हो
पर ये पाठकों की हो जाती है
ताल-सूर भले हो ना हो
लय के होने से ही आकर्षित करती है
हम ढल जाते है उन भावों में
उसमें निहित आचार पाठकों के लिए है।
कविता की वेदना ही उसकी पराकाष्ठा है।
आनंद उसकी चेतना है
उसका विषय हमारा समाज है
कविता कविता होती है
जो पढे उसी की हो जाती है।

■■

डॉ. रजनी रंजन
घाटसीला, पूर्वी सिंहभूमि
झारखंड

मेरी कविता

मैं कवि क्या बोलता हूँ ?
बस परिवेश को टटोलता हूँ,
पथ से भटके राही के अन्तर्मन को,
कभी हास्य-व्यंग्य से, कभी आक्रोश से,
झकझोरता हूँ .....
मैं कवि क्या बोलता हूँ ?
जब-जब कहीं उत्पात हो,
सत्ता के लिए आघात हो,
विज्ञान हो, इतिहास हो,
न हिंसा न कोई अस्त्र है,
कलम मेरा समस्त है,
तुझको तुझसे ही जोड़ता हूँ।
मैं कवि क्या बोलता हूँ ?
राम, कृष्ण, बुद्ध, गौतम,
क्या! कलम के थे सृजन,
वीरों के बलिदानों को,
करती थी कलम नमन।
हर्ष और विषाद की गाथाएँ
ही कुछ और थीं,
लेख अमर हुए इतिहास में,
भावनाएँ ही कुछ और थीं।
अब जब भी सरसराती कलम पन्नों पर,
लगता...हर वक्त यही कि,
किसकी पोल खोलता हूँ ?
मैं कवि क्या बोलता हूँ ?
हर दिन के नए उजाले में,
ढूँढती नजर मेरी आज,
कहीं तो रोशनी से मुलाकात हो,
न छल, न दिखावे से,
न द्रव्य, न ही स्वार्थ से,
कभी-कभी तो यादगार बात हो।
यही बार-बार मैं सोचता हूँ,
मैं कवि क्या बोलता हूँ ?
पढ़ता हूँ अखबारों में ज्यादा,
लुट गया कहीं कोई,
बेटे के इंतजार में बरसों माँ रोई,
पैसे और सत्ता के लिए,
भाई से बिछड़ा भाई प्यारा,
आज बढ़ते लालच ने इंसानियत को मारा।
पलट पन्नों को, आशा की किरण लिए,
कहीं छोटे से कोने में छपी,
कोई अच्छी खबर मैं खोजता हूँ।
मैं कवि क्या बोलता हूँ ?

■■

भावना मिलन अरोरा
नई दिल्ली, कालकाजी

अधूरे सपने

गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) से युवा कवि नीरज त्यागी की कविता प्राप्त हुई

शहर हो गये दूर गाँव से

बक्सर (बिहार) से कवि विजयानंद विजय की कविता प्राप्त हुई

कुछ शीर्षक से अलग कविताएँ भी पोस्ट की गई थीं

बोन्साई

बाबुल के आँगन से
उखाड़कर लाया गया परिपक्व पौधा
समय समय पर काँट छाँट से
बढ़ाता है शोभा
पिया के घर की
उम्र भर
बोन्साई बनकर...

■■

अंजलि सिफर

■■■■■■

राष्ट्रकवि दिनकर को समर्पित

उदित हुआ वह दिनकर की किरणों सा
गंगा के आंचल मे पल कर,
गाँवो की गलियों मे बढ़ कर,
वह नुनुआ जैसे जैसे बढ़ता है
हिन्दी का रंग उस पर चढ़ता है
हिंदी को हथियार बना कर
भारत से वह कहता है, पुनः महाभारत की तैयारी करने को वह कहता है
कुरुक्षेत्र की मिट्टी से प्रथम विजय संदेश वो दिल्ली को भिजवाता है
स्वयं परशुराम की प्रतिज्ञा लेकर हर घर रश्मि देने को वह, दिल्ली से कहता है
शोषित जनता हो अथवा लाचार मजदूर, किसान
सब मे नये हुंकार चेतना का स्वर भरता है
गांवों की गलियों से लेकर पटना की सड़कें हो या दिल्ली का वो संसद हो राष्ट्र हित की ध्वजा लिए
वह आगे आगे बढ़ता है

■■

सुशांत, वाराणसी